6 जनवरी, 2018

प्रेस विज्ञप्ति

i;koj.k lj{k.k d lns'k d lkFk ub fnYyh fo'o iLrd eyk 2018 dk 'kHkkjHk

''किताबों की एक अलग दुनिया है जो मानव के जीवन को समृद्ध बनाती है। जिस तरह जीवन जीने के लिए भोजन चाहिए, थकान दूर करने के लिए विश्राम चाहिए, ठीक उसी तरह ज़िंदगी क्यों जियें और कैसे जियें, इसके लिए पुस्तकें चाहिए। पुस्तकें इंसान के जीवन का उन्नयन करती हैं।'' ये विचार माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री प्रकाश जावड़ेकर ने वीडियो संदेश के माध्यम से नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2018 का उद्‌घाटन करते समय व्यक्त किए।

श्री जावड़ेकर ने इस वर्ष मेले की थीम 'पर्यावरण तथा जलवायु परिवर्तन' की प्रासंगिकता तथा अनिवार्यता पर विमर्श करते हुए बताया कि हम 21वीं सदी में अगर जी रहे हैं तो यह एक उधार की ज़िंदगी जी रहे हैं, क्योंकि एक पृथ्वी जितना दे सकती है मनुष्य को, हम उससे ज़्यादा ले रहे हैं। अतः पर्यावरण का संतुलन बनाना बहुत बड़ी चुनौती है। इसके लिए विश्व की एकजुट होकर एक पुकार है कि *चलो आओ, सब मिलकर दुनिया बचाएँ*। इसमें सभी को एकजुट होकर कार्य करना होगा। उन्होंने ईंधनचलित वाहनों के स्थान पर साइकिल या पैदल चलने, प्लास्टिक का कम–से–कम इस्तेमाल करने की अपील की।

उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि इस बार मेले में यूरोपीय संघ सम्मानित अतिथि है। उन्होंने बताया कि मेले में यूरोपीय संघ के 35 लेखक भाग ले रहे हैं जो पुस्तक–प्रेमियों से बातचीत करेंगे। उन्होंने यह आशा जताई कि बाल मंडप बच्चों को पुस्तकों के समीप लाएगा।

इस अवसर पर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष, डॉ. बल्देव भाई शर्मा द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। श्री शर्मा ने कहा कि भारत में आध्यात्मिक कुंभ की परंपरा भले ही 12 सालों की हो, लेकिन इस विश्व पुस्तक मेले के रूप में ज्ञान व साहित्य का कुंभ हर साल दिल्ली में होता है। उन्होंने न्यास की 60 वर्ष की यात्रा के विभिन्न पड़ावों की चर्चा करते हुए न्यास के क्षेत्रीय बोलियों एवं संस्कृत के प्रकाशन, 'हर हाथ एक किताब योजना, महिला लेखन की प्रगति की जानकारी दी। श्री शर्मा ने सभी से अनुरोध किया कि बच्चों के जन्मदिन पर कम–से–कम एक पुस्तक उपहारस्वरूप ज़रूर दें जो उनके जीवन को संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

इस अवसर पर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के तीन हिंदी प्रकाशन, यथा – यशस्विनी पाण्डे द्वारा रचित 'य से यशस्विनी य से यात्रा'; कौशल पंवार द्वारा लिखित 'जोहड़ी'; इंदिरा दांगी द्वारा रचित 'रानी कमलापति' का लोकार्पण भी हुआ। इन पुस्तकों का प्रकाशन 'महिला लेखन प्रोत्साहन योजना' के अंतर्गत किया गया है, इस योजना के अंतर्गत 40 वर्ष से कम आयु की युवा महिला लेखकों की पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। इसके अतिरिक्त, इस अवसर पर न्यास द्वारा प्रकाशित मेले की थीम 'पर्यावरण तथा जलवायु परिवर्तन' पर आधारित कैलेंडर 2018 का भी विमोचन किया गया।

इस वर्ष के पुस्तक मेले के सम्मानित अतिथि देश – यूरोपीय संघ के भारत में राजदूत, महामहिम टोमाश कोज़लौस्की ने इस सम्मान को भारत एवं यूरोपीय संघ के बीच मज़बूत व्यापारिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक संबंधों की कड़ी बताया। श्री टोमाश कोज़लौस्की ने भारत और यूरोपीय संघ के देशों की

पर्यावरण की चुनौतियों से जूझने की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए कहा कि इस दिशा में दोनों तरफ से कई महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं।

उद्घाटन अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित यूनान की लेखिका, सुश्री कल्लिया पापादाकी ने अपने उद्बोधन में बताया कि वर्षों तक लेखन ने मुझे वह व्यक्तिगत स्वतंत्रता दी जिसकी मुझे अभिलाषा थी। उन्होंने लेखक के रूप में अपनी यात्रा तथा उनके जीवन में पुस्तकों के महत्व पर अपने विचार साझा करते हुए कहा कि बचपन से ही पुस्तकें उनके लिए सुरक्षित–स्वर्ग की तरह थीं।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के उद्घाटन अवसर पर विशिष्ट अतिथि, पर्यावरणविद् सुश्री सुनीता नारायण ने मेले की थीम पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जलवायु परिवर्तन का सबसे अधिक प्रभाव भारत के गरीब और छोटे किसानों पर पड़ रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि इस विषय पर अनेक कार्यशालाएँ, संगोष्ठियाँ तो आयोजित हो रही हैं परंतु आवश्यकता है उनके कार्यान्वयन की। सुश्री नारायण ने न्यास को यह थीम चुनने के लिए बधाई देते हुए कहा कि 'पर्यावरण तथा जलवायु परिवर्तन' पुस्तक मेले के केंद्रित विषय होने के कारण आम लोगों की इस विषय के प्रति समझ एवं संवेदनशीलता बढ़ेगी।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के संयुक्त सचिव, श्री मधुरंजन कुमार ने इस अवसर पर संबोधित करते हुए कहा कि हम अपनी आने वाली पीढ़ी को वैसा ही स्वच्छ परिवेश दें जो हमें अपने पूर्वजों से मिला है।

इस अवसर पर आईटीपीओ के कार्यकारी निदेशक, श्री दीपक कुमार ने कहा कि नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला पुस्तकों, प्रकाशन तथा पठन–प्रवृत्ति के प्रोन्नयन हेतु एक आदर्श मंच है। उन्होंने यह भी कहा कि यह पुस्तक मेला, पुस्तक प्रेमियों के लिए विश्वभर से विभिन्न भाषाओं की पुस्तकें प्रस्तुत करेगा। उन्होंने यह जानकारी भी दी कि प्रगति मैदान को नए कन्वेंशन सेंटर का रूप दिया जा रहा है जिसमें 27 मीटिंग हॉल, एम्फीथिएटर, 7000 लोगों के बैठने की व्यवस्था तथा भूमिगत पार्किंग की सुविधा भी उपलब्ध होगी।

इस अवसर पर न्यास की निदेशक, डॉ. रीता चौधरी ने मानव संसाधन मंत्री व मंत्रालय, यूरोपीय संघ, आईटीपीओ, के साथ–साथ सभी सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया तथा उत्प्रेरक के रूप में मेले के महत्व को रेखांकित किया।

आयोजन के प्रारंभ में स्वागत गीत व समापन पर 'सारे जहाँ से अच्छा, हिंदोस्तां' हमारा' का मधुर गायन बाल भवन के बच्चों ने प्रस्तुत किया।